IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

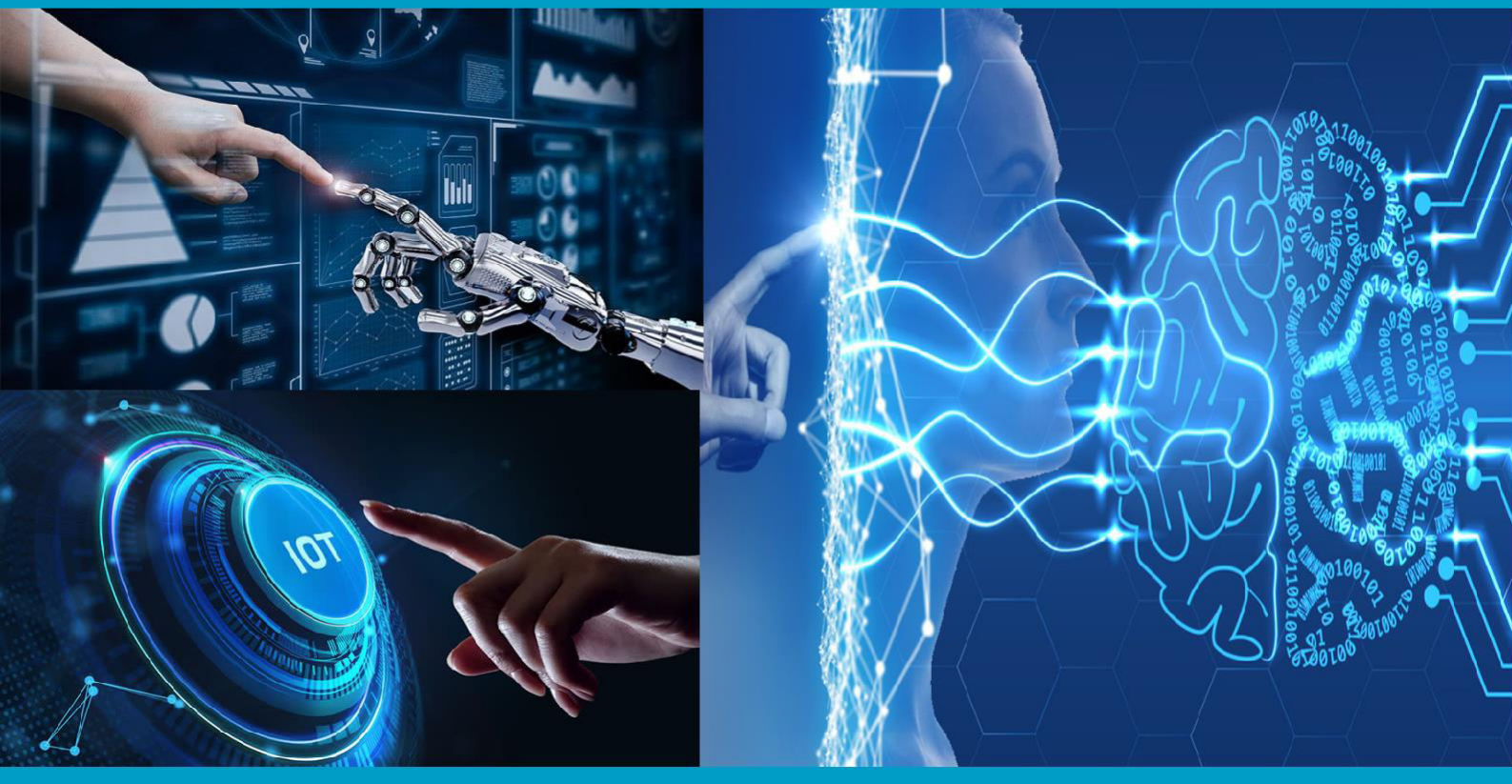

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

चित्रकला के प्रमुख माध्यम

Geetam Pradhan

Assistant Professor, M.G.R. College, Anta (Baran), Rajasthan, India

सार

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव के परिणामस्वरूप विभिन्न भौगोलिक स्थानों में समय के कारण कई प्रकार की भारतीय पेंटिंग सामने आई हैं। भारत के चित्रों को मोटे तौर पर दीवार चित्रों और लघु चित्रों के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के भारतीय चित्र इस दो व्यापक श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं, लेकिन फिर से उन्हें उनके विकास, उद्भव और शैली के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। लगभग सभी प्राचीन चित्रों को मंदिरों और गुफाओं की दीवार पर उकेरा गया है। लघु चित्रकारी कागज और कपड़े के छोटे कैनवस पर बनाई गई हैं। इस प्रकार की कला मुख्य रूप से मध्यकालीन युग में विकसित हुई जो शाही जीवन को बयान करती है जो अब काफी लोकप्रिय है।

तकनीक और माध्यम चित्रकला के दो प्रमुख पहलू हैं। इन पर निर्भर करते हुए, पेंटिंग्स को आगे चलकर पतितित्र, मार्बल पेंटिंग, बाटिक, कलमकारी, सिल्क पेंटिंग, वेलवेट पेंटिंग, पाम लीफ एचिंग, ग्लास पेंटिंग आदि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। कला के पैटर्न प्रचलन में हैं। अंतत: धर्म और संस्कृति का भी चित्रों पर अत्यधिक प्रभाव है। लोक चित्र, इंडो-इस्लामिक कला और बौद्ध कला विभिन्न प्रकार हैं। ज्यादातर गुफाओं और मंदिरों की दीवारों पर बने चित्र हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के कई पहलुओं को दर्शाते हैं।

परिचय

वात्सायन ने अपने ग्रन्थ **कामसूत्र** में 64 कलाओं की गणना की है जिनमें चित्रकला का भी स्थान है. चित्रकला का महत्त्वपूर्ण अंग है चित्र. चलिए जानते हैं हर एक काल (प्रागैतिहासिक, आद्यैतिहासिक, ऐतिहासिक, मध्यकाल, साहित्यिक) भारतीय चित्रकला क्या स्थान रहा. साथ-साथ यह भी जानेंगे कि भारतीय चित्रकला के कितने प्रकार और अंग हैं एवं इनका प्रयोजन कहाँ-कहाँ किस रूप में होता है.

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्र सकल कलाओं में श्रेष्ठ कहा गया है और उसे धर्म, अर्थ, काम आतता मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का प्रदाता भी माना गया है –

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षकम्

अतएव चित्र का इससे बड़ा उद्देश्य और इससे बड़ी प्रशंसा और कौन हो सकती है? **समरांगणसूत्रधार** (भारतीय वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित ज्ञानकोशीय ग्रन्थ) में भी लगभग इसी प्रकार से चित्र का वर्णन किया गया है – **"चित्रं हि सर्वशिल्पानां मुखं लोकस्य च प्रियम्".[1]**

गुफाओ में चित्र

भारतीय गुफा चित्रों को भारतीय चित्रों के प्रारंभिक प्रमाण के रूप में माना जाता है जो गुफा की दीवारों और महलों को कैनवास के रूप में उपयोग करते हैं जबकि लघु चित्र छोटे आकार के रंगीन, जटिल हस्तनिर्मित रोशनी हैं। विभिन्न प्रकार के भारतीय चित्रकला इतिहास के विभिन्न अवधियों में विकसित हुए। कई शैलियाँ हैं जिन्हें पहचाना जा सकता है। यह भीमबेटका की प्रागैतिहासिक गुफा पेंटिंग से शुरू होता है और अजंता की गुफाओं, एलोरा की गुफाओं और बाग के गुफा चित्रों के माध्यम से पनपता है। मध्य प्रदेश के भीमबेटका में कई गुफाओं में खोजे गए प्रागैतिहासिक चित्रों की श्रृंखला दर्ज है। ऊपरी पुरापाषाण काल से आरंभिक ऐतिहासिक और मध्यकाल तक के चित्रों की अवधि 600 वर्ष है। अजंता और एलोरा की गुफा पेंटिंग में उन बौद्ध भिक्षुओं का उल्लेख है जिन्होंने अजंता की गुफाओं की दीवारों पर भगवान बुद्ध, जातक के जीवन और शिक्षाओं को चित्रित करने के लिए चित्रकारों को नियुक्त किया। सुंदर रंगों और शैली में उनकी वेशभूषा और आभूषणों के साथ आंकड़े अजंता में प्रकट हो सकते हैं जबकि एलोरा की गुफाओं में वे चित्र हैं जो ज्यादातर हिंदू देवताओं के हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

मध्ययुगीन काल की लघु चित्रों में मुगल चित्र, राजस्थानी चित्र शामिल हैं जो कई राजाओं और शाही संरक्षण के अवलोकन और संरक्षण के तहत खिलते हैं।

मुगल पेंटिंग

मुगल की पेंटिंग, चित्रकला के इंडो-इस्लामिक शैली के समामेलन हैं, जो अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ सहित मुगल सम्राटों के अत्याचारों में फली-फूली, मुग़ल शाही समाज के दरबारी जीवन को बड़े पैमाने पर चित्रित किया। तंजौर पेंटिंग, शास्त्रीय दक्षिण भारतीय चित्रकला का रूप है, जो तमिलनाडु राज्य के तंजावुर गाँव में विकसित हुई है, जो अपनी समृद्धि और रूपों और ज्वलंत रंगों की कॉम्पैक्टनेस के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थानी पेंटिंग

ये पेंटिंग बेहतरीन गुणवत्ता की लघु पेंटिंग हैं, जो कागज पर और कपड़े के बड़े टुकड़ों पर बनाई जाती हैं। राज्य के विभिन्न भाग अपनी-अपनी शैली से चिपके रहते हैं, और इस प्रकार चित्रों के विभिन्न विद्यालयों के रूप में पहचाने जाते हैं। चित्रकला के कई प्रसिद्ध स्कूल मेवाड़, हाड़ोती, मारवाड़, किशनगढ़, अलवर और धुँधार हैं। राजस्थानी चित्रकला में मुगल चित्रों का स्पष्ट प्रभाव है, हालांकि यह अपने तरीके से काफी अलग है।

भारतीय चित्रों को उनके विभिन्न मूल के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। कई प्रकारों में, मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग, पहाड़ी पेंटिंग, लेपाक्षी पेंटिंग का उल्लेख किया जाना चाहिए।[2]

मधुबनी पेंटिंग

मधुबनी नामक छोटे शहर की महिलाएँ और मिथिला के अन्य गाँव मुख्य रूप से मधुबनी पेंटिंग या मिथिला पेंटिंग करते हैं। पूर्व में वे छोटी झोपड़ी की मिट्टी की दीवारों पर बनाए गए थे, लेकिन अब उन्हें कागज और कपड़ों पर भी उकेरा जाता है। विषय में हिंदू देवी-देवताओं, चंद्रमा और सूरज की प्राकृतिक वस्तुओं, तुलसी जैसे पवित्र पौधे और वनस्पति रंगों के उपयोग में इसकी विशेषता बनी हुई है।

पहाड़ी पेंटिंग्स

पहाड़ी पेंटिंग हिमालय की पृष्ठभूमि के रूप में लघु चित्रकला के सुंदर दृश्य हैं। राजपूतों की अवधि के दौरान हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू और कश्मीर के पहाड़ी राज्यों में विकसित, वे बीहड़ प्रकृति का एक सार है। बशोली, गुलेर-कांगड़ा और सिख नाम के तीन अलग-अलग स्कूल हैं।

लेपाक्षी पेंटिंग

एक अन्य प्रकार की भारतीय पेंटिंग लेपाक्षी पेंटिंग है; आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के एक छोटे से गाँव लेपाक्षी के मंदिर की दीवारों पर बनी एक दीवार की पेंटिंग।

विचार-विमर्श

प्रागैतिहासिक काल

भारत में चित्रकला की परम्परा बड़ी पुराणी है. प्रागैतिहासिक काल से ही भारत में चित्रकला के अस्तित्व के साक्ष्य पाए गये हैं. मनुष्य जब आदिम अवस्था में था और गुहाजीवन अथवा वन्य जीवन व्यतीत कर रहा था, तभी से उसमें चित्रकला के प्रति रुझान था. उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश की अनेक प्रागैतिहासिक गुफाओं से तत्कालीन मनुष्यों के बनाए चित्रांकन पाए गये हैं. उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर जिले के अंतर्गत तथा मध्यप्रदेश में पचमढ़ी, सिंहनपुर, रायसेन, होशंगाबाद आदि अनेक स्थानों से गुफाओं अथवा शिलाओं पर अंकित चित्र पाए गये हैं. होशंगाबाद के निकट भीमबेटका नामक स्थान पर लगभग 600 चित्रित गुफाएँ मिली हैं.

ये चित्र विषय, शैली तथा सामग्री की दृष्टि से तत्कालीन मानव-जीवन के प्रतीक हैं. इनके मुख्य विषय वन्य पशुओं का आखेट, आपस में युद्ध करते हुए मनुष्य अथवा उनके धार्मिक अनुष्ठान या पूजा की आकृतियाँ हैं. ये चित्र प्रायः धातुरंगों (गेरू, रामरज आदि) से तीन प्रकार से अंकित किये गये थे –

1. केवल दो-तीन रेखाओं द्वारा बनाई गई आकृतियाँ जिनमें चौड़ाई या मोटाई नहीं है.
2. चौड़ी आकृतियाँ जिन्हें रेखाओं से भरा गया है तथा
3. चौड़ी आकृतियाँ जिनका सम्पूर्ण अथवा कुछ भाग पूरी तरह रंग से भरा है और शेष भाग में रेखाएँ हैं. लाल रंग से बनाई जाने के कारण स्थानीय लोग इन्हें "रक्त की पुतरियाँ" (रक्त-पुत्तलिका) कहते हैं.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

आद्यैतिहासिक काल

भारतीय चित्रकला की परम्परा का अगला चरण आद्यैतिहासिकाल है. इस काल में सिन्धु घाटी की उपत्यका में एक अति विकसित सभ्यता विद्यमान थी. इस सभ्यता के विविधपक्षी अवशेष प्रारम्भ में हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो से मिले थे. अब तक इस सभ्यता के अवशेष रंगपुर, लोथल, अतरंजीखेड़ा तथा आलमगीरपुर आदि अनेक स्थानों से प्राप्त हो चुके हैं. इस सभ्यता में अन्य सामग्री के साथ मिट्टी के बर्तनों के अंसख्य टुकड़े भी मिले हैं जिन पर काले या सफ़ेद रंगों के चित्रांकन पाए गये हैं. ये बर्तन पूजा-अनुष्ठान में तो काम आते ही थे, नित्य-प्रति के उपयोग में भी लाये जाते थे और मृतक के साथ दफनाये भी जाते थे. इससे स्पष्ट होता है कि उस काल के मनुष्य कितने कलाप्रेमी थे. कला उनके जन्म-मरण की संगिनी थी. आद्यैतिहासिक पात्रों के चित्रांकन में ज्यामितिक आकृतियाँ जैसे सरल टेढ़ी रेखाएँ, कोण, वृत्त आदि विशेष हैं. इनके अतिरिक्त फूल-पत्तियाँ, पशु-पक्षी तथा मानव आकृतियाँ इ हैं.

ऐतिहासिक काल

भारतीय ऐतिहासिक काल की चित्रकला आज संसार भर में प्रसिद्ध है. इस प्रसिद्धि का कारण अजंता की चित्रकला है जिस पर यहाँ विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा. द्वितीय शताब्दी ई.पू. से भारतीय चित्रकला के अवशेष हमें अजन्ता की गुफाओं में मिलने लगते हैं जहाँ पर परम्परा का क्रमिक विकास सातवीं शताब्दी ई. तक होता रहा. अजन्ता के अतिरिक्त बाघ, बादामी, औरंगाबाद, सित्तन्नवासल आदि स्थानों से भी भारतीय चित्रकला के साक्ष्य पाए जा चुके हैं.[3]

मध्यकाल

मध्यकाल से भारत में चित्रकला लघुचित्रों में सिमट गई. पुस्त्कों के पृष्ठों पर भाँति-भाँति के विषयों तथा कथानकों का चित्रण किया जाने लगा. आगे चलकर लघु चित्रांकन (मिनिएचर पेंटिग) के रूप में चित्रकला की अनेक शैलियाँ लोकप्रिय हो गयीं जिनमें पहाड़ी, शैली, राजस्थान शैली तथा मुगुल शैली विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं. पिछले सौ-सवा सौ सालों से जब से हमें अजंता की चित्रकला की जानकारी मिली है भारतीय चित्रकला का पुनर्विकास हुआ है. बंगाल के कई चित्रकारों ने अपनी पुरानी परम्परा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है. इनमें अवनींद्रनाथ टैगोर, असितकुमार हलदार, यामिनीराय, राजा रविवर्मा, फिदाहुसेन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं. इस प्रकार भारतीय चित्रकला की परम्परा अत्यंत प्राचीन काल से आज तक अक्षुण्ण रही है.

साहित्यिक साक्ष्य

भारतीय चित्रकला के प्रकांड विद्वान् रायकृष्णदास के अनुसार **ऋग्वेद** (1/145) में चमड़े पर बने अग्नि के चित्र की चर्चा है. पाणिनि के द्वारा स्राघ राज्यों के लक्षणों की चर्चा से भी अनेक पशुई-पक्षी, पुष्प अथवा नदी-पर्वत आदि के चिन्हों को अंकित किये जाने का संकेत मिलता है. बौद्धकाल अर्थात् छठी शताब्दी ई.पू. से चित्र और चित्रकला के स्पष्ट उल्लेख मिलने लते हैं. उस युग में चित्रकला अत्यंत लोकप्रिय थी. इसका आभास बौद्ध भिक्षुओं को दिए गये उस आदेश से मिलता है जिसमें उन्हें चित्रकला से विमुख रहने को कहा गया था. **विनयपिटक** तथा **थेरी-थेरी गाथा** में चित्रों का उल्लेख मिलता है. **महाउम्मग्ग जातक** में चित्रशालाओं तथा चित्र-रचना के विविध निर्देश प्राप्त होते हैं. कालिदास के **रघुवंश** में उजड़ी अयोध्यापुरी का वर्णन है जिसकी भित्तियों पर बने चित्रों में पद्म-सरोवर के क्रीड़ा करते हुए हाथियों का मनोहर अंकन था. **मुद्राराक्षस** में चित्रपटों का तथा **कामसूत्र** में चित्रकला की सामग्री का उल्लेख है. इसके अतिरिक्त **विष्णुधर्मोत्तर** पुराण के अंतर्गत चित्र-सूत्र नामक अध्याय में तथा सोमेश्वरकृत **मानसोल्लास** के अंतर्गत **अभिलषितार्थ चिंतामणि** नामक अध्याय में चित्र, चित्रांकन तथा चित्र-सामग्री का विस्तृत वर्णन है. भारतीय चित्रकला के स्फुट साक्ष्य **महावंस, हर्षचरित, कादम्बरी, उत्तररामचरित** आदि ग्रन्थों में भी मिलते हैं. जैन ग्रन्थों में चित्रों के अनेक रूप पाए गये हैं.

भारतीय चित्रकला के प्रकार

इसी एक तल अथवा सतह पर पानी, तेल अथवा चर्बी में घोले गये अथवा सूखे रंगों से किसी आकृति के अंकन का चित्रण और उस अंकित स्वरूप को चित्र कहते हैं. ऐसा चित्रण भवन की भित्ति, प्रस्तर-फलक, काष्ठ, मिट्टी के बर्तन, चर्मपट, तालपत्र अथवा वस्त्र या कागज़ पर किया जा सकता है. भारतीय चित्रकला मोटे तौर पर चार प्रकार की जा रही है –

1. **भित्ति चित्र** – अजंता, बाघ, बादामी तथा सित्तन्नवासल की गुहा-भित्तियों पर इसके उदाहरण मिले हैं.[4]
2. **चित्रपट** – चमड़े अथवा कपडे के टुकड़ों पर की गई चित्रकारी जिसे लटकाया जाता था.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

3. **चित्र फलक** – पत्थर, धातु अथवा लकड़ी के टुकड़ों पर किया गया चित्रांकन.
4. **लघु चित्र** – बाद में पुस्तकों के पृष्ठों पर अथवा छोटे-छोटे कागज़ या वस्त्रों के टुकड़ों पर बनाए गये चित्र उन्हें प्रायः मिनिएचर पेंटिग कहा जाता है.

चित्रांकन के प्रयोजन

प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक चित्रों और साहित्यिक विवरणों के आधार पर भारतीय चित्रांकन के मुख्य प्रयोजन निम्नलिखित बताये जा सकते हैं –

1. धार्मिक अभिव्यक्ति, पूजा-पाठ आदि
2. ऐतिहासिक दृश्यों का संरक्षण
3. जीवन की प्रमुख घटनाओं का संरक्षण
4. मृत व्यक्तियों की आकृतियों का संरक्षण
5. रसों का उद्दीपन और प्रेमाभिव्यक्ति
6. भवनों, राजमहलों तथा मंदिरों का अलंकरण

परिणाम

चित्र के अंग

आम्सूत्र के लब्ध प्रतिष्ठ टीकाकार यशोधर ने चित्र के अंगों का निम्नलिखित वर्णन किया है –

रुपभेदा: प्रमाणानि लावण्यं भावयोजनम् ।

सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम् ।।

अर्थात् रुपभेद, प्रमाण, लावनी, भावयोजना, सादृश्य तथा वर्णिकाभंग ये चित्र के छह अंग हैं.

रूपभेद – भिन्न-भिन्न चित्रों में भिन्न-भिन्न रुप.

प्रमाण – अंग-प्रत्यंग की सही नाप तथा सही अनुपात.

भावयोजना – करुणा, शांति, हास्य, प्रसन्नता आदि भावों का यथास्थान अंकन.

लावण्य – सौन्दर्य या सुन्दरता.[5]

सादृश्य – जिस व्यक्ति अथवा वस्तु का चित्र हो उसी की भाँति चित्र का दिखाई देना.

वर्णिकाभंग – यथास्थान समुचित रंग भरना.

लावण्य कला का प्राण है. भाव-योजना से चित्रकला काव्य के समान रसास्वादन कराती है. सादृश्य में निष्णात कलाकार के कौशल का मर्म छिपा है. इसी प्रकार वर्णिकाभंग में चित्रकार के रचना-चातुय पर संकेत है.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

भारतीय चित्रकला के प्रमुख केंद्र

सन् 1824 ई. में जब से जनरल सर जेम्स ने अजन्ता की गुफाओं का पता लगाया और इन गुफाओं की भित्तियों पर अंकित भारतीय चित्रकला की जानकारी संसार को दी तब से भारत में अनेक स्थानों से चित्रकला के ऐसे ही उदाहरण पाए जा चुके हैं. इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बाघ, बादामी तथा सित्तन्नवासल हैं जिनमें छठी-सातवीं शताब्दी ई. के चित्रांकन हैं. अजन्ता में पाई गई कला द्वितीय शाताब्दी ई.पू. से लेकर सातवीं शताब्दी ई. तक की है.

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला तथा अन्य कलाएँ अन्य देशों की कलाओं से भिन्न हैं। भारतीय कलाओं की कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं जो भारतीय-कलाओं को अन्य देशों की कलाओं से अलग कर देती हैं यह विशेषताएँ निम्न है

धार्मिकता

भारतीय कलाओं का जन्म ही धर्म के साथ हुआ है और हर धर्म ने कला के माध्यम से ही अपनी धार्मिक मान्यताओं को जनता तक पहुँचाया है।[6]

इसी प्रकार भारतीय चित्रकला तथा शिल्प का लगभग तीन-चार हजार वर्षों से धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है अतः भारतीय चित्रकला में धार्मिक भावनाएँ पूर्ण रूप से समा गई और चित्रकला को धार्मिक महत्त्व के कारण ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का साधन माना गया है। चित्रकला तथा अन्य कलाओं को परम आनंद का साधन माना गया है।

अन्तः प्रकृति से योगी या साधक की दृष्टि से अंकन

भारतीय चित्रकला तथा अन्य शिल्पों में सांसारिक सादृश्य या बाहरी जगत की समानता का महत्त्व नहीं है बल्कि मनुष्य के स्वभाव या अन्तःकरण को गहराई तथा पूर्णता से दिखाने का अत्याधिक महत्त्व है।

गहन भावना या अन्तःकरण की इस छवि को चित्रकार योगों के समान प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार भारतीय योगी ध्यान तथा स्मृति की अवस्था को प्राप्त करके बाहरी तथा आन्तरिक प्रकृति तथा प्रकृति के विस्तीर्ण क्षेत्र का एक ही स्थान पर बैठकर साक्षात्कार कर लेता है उसी प्रकार भारतीय चित्रकार भी एक स्थान से अनेक कालों एवं स्थानों अथवा क्षेत्रों की विस्तीर्णता को एक साथ ही ग्रहण करके व्यक्त कर देता है और इस प्रकार उसकी रचना में आकाश, पाताल तथा धरा की कल्पना एक साथ ही समाविष्ट हो जाती है।

वह पाश्चात्य कलाकारों की भाँति दृश्य या आकृति के एक दर्शित पक्ष या स्थिति तक सीमित नहीं रहा है और न ही चाक्षुषपरिधि तक सीमित रहा है, उसने सदैव मन की आँख को खोलकर आकाशीय दृष्टि को धारण करके सृष्टि के रचयिता के समान ही एक कथा, घटना या चित्रित विषय को सम्पूर्ण रूप से एक ही चित्रपटी पर प्रस्तुत किया है।

यही कारण है कि अजन्ता की विस्तीर्ण चित्रावलियों में जंगल, सरोवर, उद्यान, रंगमहल, पर्वत, प्रकृति तथा कथा के पात्र चित्रकार ने एक साथ ही एक दृश्य में अंकित कर दिए हैं।

कलाकार ने चाक्षुष सीमाओं से मुक्त होकर अनेक स्थितियों तथा पात्रों आदि को एक साथ अपने मानसिक परिप्रेक्ष्य के धरातल से प्रस्तुत किया है। भारतीय चित्रकला की इस विशेषता को आज यूरोप के कलाविद् भी मानने लगे हैं।

योग पूजन

योगी तो बिना चित्र या प्रतिमा के भी ब्रह्म-ध्यान एवं प्रभू-पूजन कर सकते थे परन्तु विशाल जन-समाज योगी नहीं होता, अतः इस दृष्टि को सामने रखकर हमारे आचार्यों ने स्पष्ट उद्घोष किया 'अज्ञानां भावनार्थाय प्रतिमा परिकल्पिता ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

सगुण ब्रह्म-विषयक-मानस व्यापार आसनन्।।"

मध्यकालीन शिल्प-शास्त्रीय रचना 'अपराजित पृच्छा' में चित्र के उद्देश्य एवं क्षेत्र के विषय में रोचक वर्णन है। इस ग्रन्थ से निम्न अवतरण विचारणीय हैं

चित्रमूलोद्भवं सर्व त्रैलोक्य सचराचरम् । ब्रह्म विष्णुभवाद्याश्च सुरासुरनरोरगाः ।।
स्थावर जंगमं चैव सूर्यचन्द्रो च मेदिनी । चित्रमूलोद्भवं सर्व जगत्स्थावर जंगमम् ।।

मानवेत्तर प्रकृति का समन्वय तथा आदर्शवादिता

भारतीय कलाकार सम्पूर्ण चेतन तथा अचेतन जगत को सृष्टि का अंग मानता है, इसी से उसकी रचनाओं में मानवीय तथा प्राकृतिक जगत का अनोखा रूप दिखाई पड़ता है मानवी तथा देवी प्राकृत शक्तियों का निरूपण, पुरुष तथा नारी का समन्वय, कठोरता एवं कर्कशता, कोमलता एवं निर्मलता आदि के अनेक विरोधी अथवा पूरक तत्वों का भारतीय चित्रकला में समन्वय प्राप्त होता है दुर्गा के रूप में नारीत्व, पवित्रता, वीरता तथा कोमलता का समन्वय दिखलाई पड़ता है।[7]

इसी प्रकार गणेश, हनुमान, गरुड़ आदि रूपों में मानव, पशु या पक्षी सुलभ रूक्षता आदि का समन्वय दिखाई पड़ता है। भारतीय चित्रों की पृष्ठभूमि में अनेक अलंकरणों या अभिप्रायों के रूप में प्राकृतिक वनस्पतियों, पेड़-पौधों, फूल-पत्तियों आदि की भव्य भावपूर्ण तथा सजीव छवि अंकित की गयी है।

भारतीय कला में सौन्दर्य का आधार प्राकृतिक जगत से प्रेरित है, उदाहरणार्थ- नेत्रों की रचना कमल, मृग अथवा खंजन तथा भुजाओं की रचना मृणाल तथा मुख की रचना चन्द्र या कमल तथा अधरों की रचना बिम्बाफल के समान की गई है।

चित्रकार ने जड़ तथा पशु में भी समान रूप से आत्मा दर्शाई है इसी कारण पशु में मानवीय भावना का ओज और मानवाकृतियों में दैवी या प्राकृतिक सौन्दर्य या ओज दिखाई पड़ता है।

भारतीय कलाओं का जन्म चक्षु की अपेक्षा मन या आत्मा के धरातल से होता है इसी कारण उसमें सांसारिक यथार्थ की अपेक्षा आत्मा की पवित्रता से अनुप्राणित आदर्श रूप ही अधिक है।

भारतीय चित्रकार यथार्थ जगत में जैसा देखता है, वैसा चित्रित नहीं करता, बल्कि जैसा उसको होना चाहिए वैसा चित्रित करता है वह उसको सत्य, शिव और सुंदर रूप प्रदान करता है इस प्रकार वह आदर्श रूप की रचना करता है।

कल्पना

भारतीय चित्रकला कल्पना के आधार पर ही विकसित हुई है, अतः उसमें आदर्शवादिता का उचित स्थान है। भारतीय मनीषियों ने प्रकृति तथा यथार्थ के ऊपर उठकर कल्पना के सहारे बाह्य जगत तथा अन्तर्जगत की गहराइयों को खोजा।

उन्होंने अनेक काल्पनिक देवी-देवताओं की कल्पना की कल्पना का सर्वश्रेष्ठ रूप ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश के रूप में दिखाई पड़ता है। कल्पना का सर्वोत्तम उदाहरण नटराज रूप में विकसित हुआ।

नटराज रूप में सृष्टि के सृजन, विनाश, जीवन तथा मरण का सजीव नृत्य दर्शाया गया है। महासंहार के उपरान्त नव सृष्टि का क्रम निरन्तर प्रवाहित है जो नटराज के महान कलात्मक रूप में कलाकार ने साक्षात् कल्पित किया है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

प्रतीकात्मकता

प्रतीक कला की भाषा होते हैं। पूर्वी देशों की कलाओं में भारतीय कला के समान ही यथार्थ आकृतियों पर आधारित प्रतीक तथा साँकेतिक प्रतीकों का अत्याधिक महत्त्व है। भारत की कलाओं में जटाजूट, मुकुट, सिंहासन, वृक्ष, कलश, चक्र, पादुका, कमल, हाथी, हंस आदि प्रतीकों का विशेष स्थान है।

कलाकारों ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए प्रत्यक्ष तथा सांकेतिक अथवा कलात्मक दोनों प्रकार के प्रतीकों का सहारा लिया है। प्रकृति, पर्वत, यक्ष-देवता तथा ममता के लिए प्रतीकों के द्वारा विम्बित किया गया है।[8]

आकृतियाँ तथा मुद्रायें

भारतीय कलाओं में आकृतियों तथा मुद्राओं को आदर्श रूप प्रदान करने के लिए अतिश्योक्तिपूर्ण अथवा चमत्कारपूर्ण तथा आलंकारिक रूप प्रदान किये गए हैं। यही कारण है कि अधिकांश भारतीय, चित्रकला तथा मूर्तिकला में भारत की शास्त्रीय नृत्य शैलियों की आकृतियों, मुद्राओं तथा अंगभंगिमाओं का विशेष महत्त्व है।

मानव आकृतियों या जीवधारियों की आकृतियों की रचनाएँ यथार्थ की अपेक्षा भाव अथवा गुण के आधार पर की गई हैं। मुद्राओं के विधान से आकृति की व्यंजना की गई है तथा आकृति के भावों को दर्शाया गया है।

अजंता शैली की मानव आकृतियाँ तो अपनी भावपूर्ण नृत्य मुद्राओं के कारण जगत प्रसिद्ध हैं ही, राजपूत तथा मुगल शैलियों में भी विविध नृत्य मुद्राओं का समावेश किया गया है।

मुद्राओं के द्वारा अनेक भाव सफलता से दर्शाये गए हैं- उदाहरणार्थ ध्यान, उपदेश, क्षमा, भिक्षा, त्याग, तपस्या, वीरता, विरह, काँटा निकालने की पीड़ा, प्रतीक्षा, एकाकीपन आदि मानव मन के भावों को बड़ी सरल तथा स्वाभाविक मुद्राओं के द्वारा मूर्तिमान किया गया है।

भारतीय कलाओं में मुद्राओं का आधार भरत मुनि द्वारा रचित 'नाट्य-शास्त्र' था नाट्य शास्त्र के अभिनय प्रकरण में वर्णित अंगों तथा उपांगों के भिन्न-भिन्न प्रयोगों के द्वारा अनेक मुद्राओं का अवतरण किया गया है। मुद्दाओं को हम भाव छवि भी कह सकते हैं।

सामान्य पात्र

पाश्चात्य कला में व्यक्ति वैशिष्ठ का महत्त्व है परन्तु भारतीय कला में सामान्य पात्र – विधान परम्परागत रूप से विकसित किया गया है।

सामान्य पात्र विधान का अर्थ है आयु, व्यवसाय अथवा पद के अनुसार पात्रों की आकृति तथा आकृति के अनुपातों का निर्माण करना राजा, रंक, देवता तथा राक्षस, साधु तथा सेवक, स्त्री, गंधर्व, शिशु, किशोर युवक तथा वामन आदि के रूपों तथा उनके अंग-प्रत्यंग के अनुपातों को भारतीय कला में निश्चित किया गया है।

पद अथवा व्यवसाय के अनुसार उनके चिन्ह तथा आसन आदि भी निश्चित किये गए हैं।

आलंकारिकता

अलंकरण से आकर्षण प्राप्त होता है, अतः कला का कार्य अलंकरण करना भी है। भारतीय कलाकार सत्यं तथा शिव के साथ सुंदरं की कल्पना भी करता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0912015 |

अतएव सुंदर तथा आदर्श रूप के लिए वह अलंकरणों का अपनी रचनाओं में प्रयोग करता है और आकृतियों की रूपश्री का वर्धन होता है, जैसे चन्द्र के समान मुख, खंजन अथवा कमल के समान नैन, कदली-स्तम्भों के समान जंघाएँ, शुक पंपू के समान नासिका ।

भारतीय आलेखनों में अलंकरण का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। अजंता की गुफाओं में छतों के अलंकरणों, राजपूत तथा मुगल चित्रों के हांसियों में पुष्पों, पक्षियों, मानवाकृतियों, पशुओं तथा प्रतीक चिन्हों आदि को अति-आलंकारिक रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

अजंता तथा बाघ की चित्रावलियाँ संसार में आलंकारिकता का उत्तम उदाहरण है।

नाम

भारत में चित्रों पर चित्रकारों के द्वारा नामांकित करने की परम्परा नहीं थी। कलाकारों के नाम अपवाद रूप में ही कृतियों पर अंकित हैं।

मुगल काल में चित्रकारों के द्वारा चित्रों पर अपने नाम लिखने की प्रथा प्रचलित हुई और चित्र के निर्माता कलाकारों के नाम चित्रों पर अंकित किये जाने लगे।

रेखा तथा रंग

भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। चित्र की आकृतियाँ प्रकृति एवं वातावरण सबको निश्चित सीमा रेखाओं में अंकित किया गया है।

इन आकृतियों में सपाट रंग का प्रयोग किया गया है रंगों का प्रयोग आलंकारिक या कलात्मक योजना पर आधारित है या रंगों को सांकेतिक आधार पर प्रयोग किया गया है।[9]

संदर्भ

1. "चित्र के छह अंग (रवीन्द्रनाथ ठाकुर की व्याख्या)". मूल से 13 दिसंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 दिसंबर 2014.
2. ↑ सी शिवमूर्ति : Chitrasutra of the Vishnudharmottara, पृष्ट 166]
3. Krupa, Lakshmi (2013-01-04). "Madhubani walls". The Hindu (अंग्रेज़ी में). आइ°एस°एस°एन° 0971-751X.
4. ↑ Madhubani Painting (अंग्रेज़ी में). Abhinav Publications. 2003. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-7017-156-0.
5. भारतीय चित्रकला (हिन्दी ब्लाग)
6. चित्रकला विभाग, एमएमएच कॉलेज गाजियाबाद
7. भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास (गूगल पुस्तक ; लेखक - वाचस्पति गैरोला)
8. Italian Paintings
9. जापानी रंगचित्र कला 'हाइगा'

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com